4. भूषण

कवि परिचय

रीतिकाल में जिन रचनाकारों ने श्रृंगार के अतिरिक्त अन्य रसों एवं प्रवृत्तियों को काव्य–सृजन का आधार बनाया, उनमें महाकवि भूषण अग्रगण्य है। उन्होंने भारतीय संस्कृति के महान रक्षक शिवाजी और छत्रसाल की वीरता का ओजस्वी वर्णन करके हिंदी कविता की श्रीवृद्धि की।

भूषण कानपुर जिले के तिकवाँपुर गाँव के निवासी रत्नाकर त्रिपाठी के पुत्र थे। इनका जन्म सन् 1613 ई० में हुआ था। प्रसिद्ध कवि चिंतामणि और मतिराम इनके भाई कहे जाते हैं। आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र के अनुसार इनका नाम घनश्याम था। इनको 'भूषण' की उपाधि चित्रकूट के राजा रुद्र सोलंकी से मिली थी परंतु अब इनका नाम भूषण ही काव्य जगत में प्रसिद्ध है।

भूषण अनेक राजाओं के आश्रय में रहे किन्तु इन्हें दो वीरों के आश्रय में रहने से ही विशेष मान मिला। वे थे महाराज शिवाजी और वीर छत्रसाल। उन्होंने औरंगजेब की नीतियों का विरोध कर उससे अनेक युद्ध किए थे। ऐसे महावीरों को चरितनायक बनाकर भूषण ने कविता को सार्थक किया। कहते हैं, महाराज छत्रसाल ने इन्हें सम्मान देने के लिए इनकी पालकी में कंधा लगाया था, तभी भूषण ने कहा था – ''सिवा कौ बखानों कै बखानों छत्रसाल कौ।'' इनका निधन सन् 1715 ई० में हुआ माना जाता है।

काव्य परिचय

भूषण के तीन काव्य–ग्रंथ प्राप्त हैं – शिवराजभूषण, शिवाबावनी और छत्रसाल दशक।

भूषण की कविता ब्रजभाषा में है। शिवाजी और छत्रसाल का शौर्यवर्णन उनके काव्य का मुख्य विषय है। शिवाजी की युद्धवीरता, दानशीलता, दयालुता, धर्मवीरता आदि का सजीव वर्णन ओजस्वी वाणी में इन्होंने किया है। इसी कारण भूषण वीररस के प्रथम कोटि के कवि माने जाते हैं।

अपनी कविता में भूषण ने ऐतिहासिक घटनाओं को बराबर ध्यान में रखा है जिससे वर्णनों की प्रामाणिकता असंदिग्ध है। उन्होंने अरबी, फारसी शब्दों का बहुतायत से प्रयोग किया है। शब्दों को तुक मिलाने या प्रभाव पैदा करने के लिए तोड़ा–मरोड़ा भी खूब है। अनेक स्थलों पर व्याकरण के नियमों की भी चिंता नहीं की है, फिर भी वीर भावनाओं को उद्बुद्ध करने की उनमें अद्भुत क्षमता है। भूषण का काव्य वीररस का पर्याय बन गया है।

पाठ संकेत

प्रस्तुत संकलन में भूषण के 5 छंदों में शिवाजी की वीरता वर्णित है। 5 छंद छत्रसाल की प्रशंसा से संबद्ध हैं। शिवाजी की वीरता की परंपरा–रूढ़ वर्णन प्रारंभ के दो छंदों में है। इनमें शिवाजी के आतंक से पीड़ित शत्रु–नारियों की दुर्दशा चित्रित है। शिवाजी की विजय एवं औरंगजेब आदि के शत्रुओं मानभंग का वर्णन है तथा औरंगजेब के सेनापतियों का भय वर्णित है।

शिवाजी की वीरता, युद्धवीरता, औरंगजेब के मन में शिवाजी के भय का सजीव वर्णन है। पाँचवें छंद में शिवाजी को भारतीय संस्कृति के महान रक्षक के रूप में चित्रित किया गया है।

छत्रसाल विषय छंदों में प्रथम में छत्रसाल के आक्रमण, द्वितीय में उनकी महिमा, तृतीय में युद्धवीरता चतुर्थ में उनकी बरछी एवं पंचम में उनके प्रताप का ओजस्वी वर्णन है।

शिवाजी का शौर्य

ऊँचे घोर मन्दर के अन्दर रहनवारी,
ऊँचे घोर मन्दर के अन्दर रहाती है।
कंदमूल भोग करैं कन्दमूल भोग करें,
तीन बेर खाती ते वै तीन बेर खाती हैं।।
भूषन सिथिल अंग भूषन सिथिल अंग,
बिजन डुलातीं ते वै बिजन डुलाती हैं।
'भूषन' भनत सिवराज वीर तेरे त्रास,
नगन जड़ाती ते वै नगन जड़ाती हैं।।1।।
गढ़न गँजाय गढ़धरन सजाय करि,
छाँड़ि केते धरम दुवार दै भिखारी से।
साहि के सपूत पूत वीर सिवराजसिंह,
केते गढ़धारी किये वन वनचारी से।।
'भूषन' बखानैं केते दीन्हें बन्दीखानेसेख,
सैयद हजारी गहे रैयत बजारी से।
महतो से मुगल महाजन से महाराज,
डाँडि लीन्हें पकरि पठान पटवारी से।।2।।
दुग्ग पर दुग्ग जीते सरजा सिवाजी गाजी,
उग्ग नाचे उग्ग पर रुण्ड मुँड फरके।
'भूषन' भनत बाजे जीति के नगारे भारे,
सारे करनाटी भूप सिंहल लौं सरके।।
मारे सुनि सुभट पनारेवारे उद्भट,
तारे लागे फिरन सितारे गढ़धर के।
बीजापुर वीरन के, गोकुण्डा धीरन के,
दिल्ली उर मीरन के दाड़िम से दरके।।3।।
अंदर ते निकसीं न मंदिर को देख्यो द्वार,
बिन रथ पथ ते उघारे पाँव जाती हैं।
हवा हू न लागती ते हवा ते बिहाल भईं,
लाखन की भीरि में सम्हारतीं न छाती हैं।।
'भूषन' भनत सिवराज तेरी धाक सुनि,

हयादारी चीर फारि मन झुझलाती हैं।
ऐसी परीं नरम हरम बादसाहन की,
नासपाती खातीं तें वनासपाती खाती हैं।।4।।
बेद राखे विदित पुरान परसिद्ध राखे,
राम नाम राख्यो अति रसना सुधर में।
हिंदुन की चोटी रोटी राखी है सिपाहिन की,
काँधे में जनेऊ राख्यो माला राखी गर में।
मीड़ि राखे मुगल मरोड़ि राखे पातसाहि,
बैरी पीसि राखे बरदान राख्यो कर में।
राजन की हद्द राखी तेगबल सिवराज,
देवराखे देवल स्वधर्म राख्यो घर में।।5।।

छत्रसाल की वीरता

रैयाराव चंपति को चढ़ो छत्रसाल सिंह भूषण भनत गजराज जोम जमके।
भादौ की घटा सी उड़ि गरद गगन घिरे सेलैंसमसेरैं फिरे दामिनि सी दमके।
खान उमरावन के आन राजारावन के सुनि सुनि उर आगैं घन कैसे घमके।
बैयर बगारन की अरिके अगारन की लाँघती पगारन नगारन के धमके।।1।।

चाकचकचमू के अचाकचक चहूँ ओर, चाक सी फिरति धाक चंपति के लाल की।
भूषन भनत पातसाही मारि जेर कीन्ही, काहू उमराव ना करेरी करवाल की।
सुनि सुनि रीति बिरुदैत के बड़प्पन की, थप्पन उथप्पन की बानि छत्रसाल की।
जंग जीतिलेवा तेऊ ह्वै कै दामदेवा भूप, सेवा लागे करन महेवा महिपाल की।।2।।

अस्त्रगहि छत्रसाल खिभयो खेत बेतबै के, उत तें पठानन हूँ कीन्ही झुकि झपटैं।
हिम्मति बड़ी कै कबड़ी के खेलवारन लौं, देत सै हजारन हजार बार चपटैं।
भूषन भनत काली हुलसी असीसन कौं, सीसन कौं ईस की जमाति जोर जपटैं।
समद लौं समद की सेना त्यों बुँदेलन की सेलैं समसेरैं भईं बाड़व की लपटैं।।3।।

भुज–भुजनेस की बैसंगिनी भुजंगिनी सी खेदि खेदि खाती दीह दारुन दलन के।
बखतर पाखरन बीच धँसि जाति मीन पैरि पार जात परबाह ज्यों जलन के।
रैयाराव चंपति के छत्रसाल महाराज भूषन सकै करि बखान को बलन के।
पच्छी पर छीने ऐसे परे परछीने बीर तेरी बरछी ने बर छीने हैं खलन के।।4।।

राजत अखंड तेज छाजत सुजस बड़ो, गाजत गयंद दिग्गजन हिय साल को।
जाहि के प्रताप सों मलीन आफताब होत, ताप तजि दुज्जन करत बहुत ख्याल को।

साज सजि गज तुरी पैदर कतार दीन्हे, भूषन भनत ऐसो दीनप्रतिपाल को।
आन रावराजा एक मन में न लाऊँ अब, साहू को सराहों कै सराहौं छत्रसाल को।।5।।

•••

शब्दार्थ

मन्दर–भवन / मन्दर–कन्दरा / कंदमूल–मेवा, मिष्टान्न / कन्दमूल–वृक्षों की जड़ें / भूषन–आभूषण / भूषन–भूख / बिजन–पंखा / बिजन–निर्जन / नगनजड़ाती–नगीने जड़े हुए थे / नगन जड़ाती–जाड़े में वस्त्रहीन काँपती है / गंजाय–तोड़–फोड़ कर / हजारी–पंच हजारी, मनसबदार / डांडि–दंड, जुरमाना / गांजी–विजेता / पगारन – परकोटा / करेरी–कठोर / जेर कीन्ही–हीन / थप्पन–स्थापना / उथप्पन–उठा देना / खिभयो–क्रुद्ध हुआ। खेत–रणक्षेत्र / कबड़ी–कबड्डी का खेल / चपटैं–चोट / जपटैं–झपटती है / समद लौं–समुद्र सम / समद–अब्दुस्समद / बैसंगिनी–जीवन भर साथ देने वाली / खेदि–खदेड़कर / बख्तर–कवच / आफताब–सूर्य / तुरी–तुरंग, घोड़ा।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. भूषण ने किसे श्रेष्ठ वीर माना है –

(क) अल्लाउद्दीन (ख) औरंगजेब
(ग) मानसिंह (घ) शिवाजी ( )

2. 'चमू' का अर्थ है –

(क) चक्र (ख) चमड़ा
(ग) चमक (घ) सेना ( )

उत्तरमाला – (1)घ (2) घ

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

1. शिवाजी ने किसे आतंकित कर रखा था ?
2. 'तीन बेर खाती ते वैं तीन बेर खाती हैं' पटरानियों की ऐसी दशा किस कारण हुई?
3. 'कंदमूल भोग करैं कंदमूल भोग करैं' पंक्ति में कौनसा अलंकार है ?
4. शिवाजी ने गढ़पतियों के साथ कैसा व्यवहार किया ?
5. भूषण ने छत्रसाल की भुजाओं की समता किससे की है ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. 'भुज भुजगेस की बैसंगिनी भुजंगिनी' से क्या तात्पर्य है ?
2. 'तीन बेर खाती ते वैं तीन बेर खाती हैं' का अर्थ लिखिए।
3. शिवाजी के डर के कारण बेगमों पर क्या प्रभाव पड़ा ?
4. 'नासपाती खातीं तें वनासपाती खाती हैं' पंक्ति का अर्थ लिखिए।
5. छत्रसाल के प्रताप का वर्णन तीन पंक्तियों में कीजिए।

निबंधात्मक प्रश्न

1. 'भूषण का काव्य वीर रस प्रधान है' उक्त कथन की सार्थकता पर विचार कीजिए।
2. भूषण की काव्य कला की विशेषताएँ बताइए।

3. निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –

(क) ऊँचे घोर ....जड़ाती हैं।

(ख) चाक चक...महिपाल की।

(ग) भुज भुजगेस..खलन के।

(घ) अंदर ते..खाती हैं।

•••

यह भी जानें

संयुक्त वर्ण

(क) खड़ी पाई वाले व्यंजन – खड़ी पाई वाले व्यंजनों के संयुक्त रूप परंपरागत तरीके से खड़ी पाई को हटाकर ही बनाए जाएँ। जैसे – ख्याति, लग्न, विघ्न, कच्चा, छज्जा, नगण्य, कुत्ता, व्यास, श्लोक, राष्ट्रीय, स्वीकृति, यक्ष्मा, यंबक आदि।

(ख) क और फ/फ़ के संयुक्ताक्षर – क और फ के हुक को हटाकर ही संयुक्ताक्षर बनाए जाएँ। जैसे संयुक्त, पक्का, दफ्तर आदि। न कि संयुक्त, पक्का की तरह।

(ग) ङ, छ, ट, ठ, ड, ढ, द और ह के संयुक्ताक्षर हल् चिह्न लगाकर ही बनाए जाएँ। जैसे – वाङ्मय, लट्टू, बुड्ढा, विद्या, चिह्न, ब्रह्मा आदि। (वाङ्मय, लट्टू, बुड्ढा, चिह्न, ब्रह्मा नहीं)

•••